International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 48-51

कल्पना के सुकुमार कवि सुत्रिानंदन पंत की काव्य यात्रा के विविधि सोपान

रेणु
B.Ed. Teacher, G.G.S.S.S. Sindhvi Khera, Jind, Haryana, India

सारांश
कविवर पंत सुकोमल भावनाओं के कवि हैं। वे हिन्दी साहित्य में अपनी सौन्दर्य दृष्टि और सुकुमार उदात्त कल्पना के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रकृति के साथ उनकी प्रगाढ़ता शैषवावस्था से हुई है फलस्वरूप उन्होनें प्रकृति के अनेक रूपों की कल्पना की तथा उनके सौन्दर्यमयी चित्र अंकित किए हैं। कहीं वे प्रकृति के कोमल रूप का वर्णन करते हैं तो कहीं उग्र रूप का। परन्तु उन्होंने प्रकृति के मनोरम रूप का ही वर्णन किया है। कुछ स्थलों पर वे प्रकृति का नारी के रूप में कल्पना करके पाठक को मंत्र मुग्ध कर देते हैं। कविवर पंत हिन्दी के उन कवियों में से एक हैं जिनकी कविता का स्वर समय के साथ–साथ बदलता रहा है। उनकी प्रारम्भिक कविताएँ छायावादी कविताएँ थी परन्तु बाद में उनकी कविता ने प्रगतिवाद का रास्ता पकड़ लिया। उनके कारण विकास का तीसरा चरण अन्तश्चेतनावादी युग के रूप में सामने आया जिसमें उनकी कविता अरविन्द दर्शन से प्रभावित रही है। पन्त के काव्य विकास का अन्तिम चरण नव–मानवतावादी युग के रूप में जाना जाता है जिसमें कवि ने नव–मानवता का सन्देश सुनाया है।

मुख्य शब्द : विकम्पित, सस्मित, सारगर्भित, परिवेष्टित, प्रांजल, अन्तरात्मा, चिर निद्रा, शाश्वतता।

प्रस्तावना
प्रकृति के स्वच्छन्द, निर्मल, विकसित रंग–रूप से जीवन के प्रत्येक भावलोक और उसके प्रत्येक कोने को सजा–संवार कर प्रस्तुत किया। इस प्रकार आद्यान्त प्रकृति के अनन्य उपासक, कोमल–कान्त और सुकुमार गायक का नाम है – कविवर सुमित्रानन्दन पन्त, जिन्होनें प्रकृति की गोद से प्रकृति की गोद में जन्म लिया, आजीवन उसी का पोषण किया – उसी से पोषित हुए और अन्त में उसी की गोदी में समाकर चिरनिद्रा में विलिन हो गए।

व्यक्तित्व : विविध आयाम
प्रकृति के सुकुमार कवि पन्त का जन्म प्रकृति की गोद में बसे, अल्मोड़ा जिले के कोसानी ग्राम में 1900 ई0 में हुआ था। इनके पिता का नाम प0 गंगादत्त पंत और माता का नाम श्रीमती सरस्वती देवी था। इन्हें जन्म देने के कुछ ही घण्टे बाद माता का स्वर्गवास हो गया था अतः इनका लालन–पालन दादी, पिता और बुआ की देख–रेख में ही हो सका। इनका वास्तविक नाम गोसाईं दत्त था और पिता की चौथी सन्तान थे। जब इन्होंने काव्य–सृजन आरम्भ किया तो गोसाई दत्त पन्त से सुमित्रानन्दन पन्त हो गए। इनकी आरम्भिक शिक्षा अपने जन्म–स्थान कोसानी ग्राम की पाठशाला में ही हुई। प्राईमरी तक की शिक्षा उतीर्ण करने के बाद इन्होंने अल्मोड़ा के हाई स्कूल में प्रवेश दिलाया गया। सन् 1911 तक यहीं रहकर शिक्षा में दत्त चित रहे। नवम् कक्षा उर्तीण करने के बाद इन्हें आगे शिक्षा जारी रखने के लिए बनारस भेज दिया गया। वहाँ के प्रसिद्ध क्वीन्स कॉलेज से इन्होंने हाई स्कूल की परीक्षा उतीर्ण की। इसके बाद उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए म्योर सैन्ट्रल कॉलेज, प्रयाग में आ गए।

ऊपर यह बताया जा चुका है कि जन्म देने के कुछ घण्टे बाद ही पंत जी की माता का स्वर्गवास हो गया था। इनका लालन–पालन दादी, पिता और बुआ की स्नेह छाया में पूरे मनोयोग से हुआ, पर माता के अभाव की पूर्ति फिर भी सम्भव न हो सकी। इस अभाव ने ही कविवर पन्त को अत्याधिक संकोची स्वभाव वाला और एकान्त प्रिय बना दिया। कहते हैं कि शैशवी सुकुमार क्षणों में ही बालक पन्त घर से दूर घने जंगलों में निकल जाया करते थे। वहाँ किसी पहाड़ी या पहाड़ी झरने की ओट में बैठकर घण्टों प्रकृति का संगीत सुनते रहा करते, अपलक प्राकृतिक दृश्यों को अपनी नन्हीं–मुन्नी अन्तश्चेतना में उतारते रहते। तभी तो आगे चलकर प्रकृति का जैसा सजीव–स्वरित चित्रण यह कर पाऐं हैं, प्रकृति का वैसा सजीव वर्णन अन्य कोई भी हिन्दी कवि नही कर पाया।

पंत की कल्पनाशीलता
आधुनिक हिन्दी साहित्य में जयशंकर प्रसाद अपनी मधुर कल्पना के लिए प्रसिद्ध हैं तो पंत अपनी कोमल एवं सुकुमार कल्पना के लिए। पंत के काव्य में हमें सर्वत्र कल्पना–जनित सुन्दर चित्र दिखाई देते हैं लेकिन उनकी कल्पना कोमलता लिए हुए हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि वेदना कवि को सदा पीड़ित करती रही है। अश्रुओं से सिसकते रहने पर भी वे मधुर और कोमल गीत गाते रहे हैं। 'आँसू' में वे कहते भी हैं –

कल्पना में कसकती वेदना,
अश्रु में जीता सिसकता गान है।

'वीणा' पंत जी की प्रथम काव्य रचना है। उनकी काव्य यात्रा निरंतर कल्पना का आश्रय पाकर अग्रसर होती रही। लोकायतन एवं चिन्दबरा तक की सभी रचनाओं में पंत की कल्पनाशीलता देखी जा सकती है। उनके काव्य में अनुभूति की अपेक्षा कल्पना की प्रधानता है। कविवरपंत तो कल्पना को सत्य मानते थे इसलिए वे कल्पना को महत्व प्रदान करते हुए कहते हैं – ''मैं कल्पना को सबसे बड़ा सत्य मानता हूँ। मेरी कल्पना को जिन–जिन विचार धाराओं से प्रेरणा मिली है, इन सबका समीकरण करने की चेष्टा मैंने की है। मेरा विचार है कि वीणा से लेकर ग्राम्य तक सभी रचनाओं में मैंने अपनी कल्पना को वाणी दी है और उसी का प्रभाव उन पर मुख्य रूप से रहा है। ''

2. प्रकृति–चित्रण में कल्पनाशीलता

कविवर पंत ने प्रकृति के बड़े सजीव और सुकुमार चित्र प्रस्तुत किए हैं। प्रकृति संबंधी वर्णन में सर्वत्र पंत जी की कल्पना–शीलता देखी जा सकती है। यूं तो पंत ने प्रकृति के आलंबन, उद्दीपन आदि सभी रूपों का चित्रण किया है लेकिन उन्होंने सर्वत्र अपनी कल्पना के प्रयोग द्वारा प्रकृति सुन्दरी की रमणीय छटा को आकर्षक बना दिया है। स्वयं कवि पंत ने स्वीकार किया है ''ऊषा, संध्या, फूल, कोंपल, कलख, ओसों के वन और नदी निर्झर मेरे एकाकी किशोर मन को सदैव अपनी ओर आकर्षित करते रहे हैं तथा सौन्दर्य के अनेक सभ्य स्फुट उपकरणों से मनोरम मूर्ति रचकर मेरी कल्पना समय–समय पर उसे काव्य मंदिर में प्रतिष्ठित करती रही है।'' पर्वत प्रदेश में पावस' में से एक उदाहरण देखिए –

''पावस ऋतु थी पर्वत प्रदेश'
पल–पल परिवर्तित प्रकृति वेश !
मेखलाकार पर्वत अपार
अपने सहस्र दृग सुमन फाड़,
अवलोक रहा है बार–बार,
नीचे जल में निज महाकार,
जिसके चरणों में पला ताल,
दर्पण सा फैला है विशाल।''

3. नारी के सौन्दर्य वर्णन में कल्पनाशीलता

नारी के प्रति कविवर पंत की भावनाएँ बड़ी उदात्त एवं उदार हैं। वे उसे देवी माँ, सहचरी, प्राण आदि शब्दों से संबोधित करती हैं और अपनी कोमल कल्पना के माध्यम से नारी के सहज एवं स्वाभाविक सौन्दर्य का अंकन करते हैं। वस्तुतः पंत के समक्ष भारतीय नारी की अनुपम सुकुमारता और पावन विद्यमान रही है। वे तो प्राचीन ऋषियों के इस कथन से सहमत थे –

''यत्र नार्युस्त पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।''

पंत ने नारी के बाह्या रूप एवं आकर्षण को अधिक महत्व नहीं दिया बल्कि उन्होंने नारी के आन्तरिक गुणों को ही सौन्दर्य का विधायक स्वीकार किया है। यहाँ कवि अपनी कल्पना का आश्रय लेते हुए नारी के बाह्या तथा आन्तरिक गुणों का समन्वय करता हुआ कह उठता है –

''नारी की सुन्दरता पर मैं होता नहीं विमोहित,
शोभा का ऐश्वर्य मुझे करता, अवश्य आनन्दित!
विषद स्त्रीत्व का मैं मन में करता हूँ नित पूजन,
जब आभादेही नारी आहलाद प्रेम करे वर्षण
मधुर मानवी की महिमा से भू को करती पावन।''

4. वस्तु–वर्णन में कल्पनाशीलता

कविवर पंत ने वस्तु वर्णन में भी अपनी कोमल कल्पना का प्रयोग किया है। 'पल्लव' पंत जीका सुप्रसिद्ध काव्य संग्रह है। इसमें कवि ने पल्लवों के रंगीन चित्र अंकित किए हैं। तदर्थ उन्होंने अपनी कोमल कल्पना का आश्रय लिया है। कभी–कभी तो पाठक को ऐसा लगता है मानों पंत जी ने कल्पना की तूली लेकर रंगीन चित्र अंकित कर दिए हैं। 'बादल' कविता से एक उदाहरण देखिए –

''कभी अचानक भूतों का–सा
प्रकटा विकट महा आकार,
कड़क–कड़क, जब हँसते हम सब
थर्रा उठता है संसार;
फिर परियों के बच्चों से हम
सुभग सीप के पंख पसार,
समुद्र तैरते शुचि ज्योत्स्ना में
पकड़ इन्दु के कर सुकुमार।''

5. भाव निरूपण में कल्पनाशीलता

वैसे तो कविवर पंत में अनुभूति की कमी है तथा कल्पना का आधिक्य है फिर भी उन्होंने अपनी रचनाओं में कल्पना के सहारे विभिन्न भावों का हृदयग्राही वर्णन किया है। रति, शोक, भय, विस्मय आदि भाव उनकी काव्य रचनाओं में यत्र–तत्र देखे जा सकते हैं। एक बार कवि नदी में नौका विहार कर रहा था, लेकिन अचानक वे नदी में डूबकर अचेत हो गए। एक सुन्दर युवती ने कवि को बाहर निकाला और फिर जब कवि होश में आया तो उसने अपने सिर को उस सुन्दर युवती की गोद में पाया फलस्वरूप कवि का प्रेम बंधन सुदृढ़ हो गया। लेकिन उस युवती का विवाह अन्यत्र हो गया और कवि का मन आहत हो उठा। 'ग्रन्थि' कविता उसी का परिणाम है। इस कविता में कवि ने अपने प्रेम–भाव का बड़ा ही सुन्दर और आकर्षक वर्णन किया है –

''एक पल, मेरे प्रिया के दृग–पलक
थे उठ ऊपर, सहज नीचे गिरे,
चपलता ने इस विकम्पित पुलक से
दृढ़ किया मानो प्रणय–सम्बन्ध था!
लाज की मादक सुरा–सी ललिमा
फैल गालों में, नवीन गुलाब–से,
छलकती थी बाढ़ – सी सौन्दर्य की
अधखुले सस्मित गढ़ों से सीप–से।''

1. गद्यकार के रूप में

एक गद्यकार के रूप में इन्होंने 'पाँच–कहानियाँ नामक एक कहानी – संकलन, साठ वर्ष, एक रेखांकन' नामक एक आत्मकथा 'हार' नामक एक उपन्यास, 'महादेवी संस्मरण ग्रंथ' और 'छायावाद का पुनर्मूल्यांकन' नामक दो आलोचना ग्रंथ हिन्दी–साहित्य को प्रदान किए। इनके अतिरिक्त अपने विभिन्न काव्य–संकलनों की भूमिका के रूप में इन्होनें कुछ सारगर्भित आलोचनात्मक निबन्ध भी रचे, जो अलग से प्रकाशित न होकर संकलनों के साथ ही प्रकाशित संकलित हैं। इस दृष्टि से इनके काव्य–संकलन 'रश्मि–बन्ध' की भूमिका विशेष उल्लेखनीय है। पन्त जी का गद्य साहित्य स्वल्प होते हुए भी उनकी विचार भूमि को समझने, छायावादी काव्य के भाव बोध को हृदयगम करने की दृष्टि में विशेष महत्वपूर्ण है।

2. कवि–रूप में

इस रूप में पन्त जी का कृतित्व महत्वपूर्ण और विशाल है। मान–मर्यादा का प्रतिपादक और सहज मानवीय अनेकविध अन्तः वाह्य प्रवृतियों का धोतक है। मानव की सहज सौन्दर्य प्रेम और मानवीयता की द्वन्द्वात्मक भावनाओं का चितेरा है। उसकी ऊर्जा का उन्मुक्त–स्वच्छन्द गायन भी है और सौन्दर्यमय पर्यावरणों में परिवेष्टित महनीय अन्तः, बाह्य भावनाओं का शाश्वतता एवं समसामयिकता के सन्दर्भों में सत्य–शिवमय मंगलकारी पृष्ठ भूमि पर उद्गिरण भी है।

अपनी पहली रचना 'वीणा' को कवि ने 'तुतली बोली में एक बालिका का उपहार कहकर अभिहित किया है, फिर भी इसके अध्ययन से उड़ान के लिए पंख फड़फड़ाती कवि की कल्पना एवं

काव्यगत चेतना का सहज आभास मिल जाता है। लगने लगता है कि यह तुतली बोली की बालिका छायावादी काव्य–धारा को एक नव्य–भव्य क्षितिज प्रदान कर पाने में समर्थ हो सकेगी। कविवर पन्त को सर्वाधिक प्रसिद्धि प्रदान करने, उन्हें छायावाद के प्रमुख उन्नायक का पद दिलवाने वाली अगली रचना का नाम है – 'पल्लव'। पल्लव के आलोचक कवि की प्रतिभा का पूर्ण यौवन और उसकी पूर्णता के क्षणों की वाणी मानते हैं।

'गुंजन' नामक काव्य से कविवर पंत का प्रकृति –प्रेम एवं यौवनोन्माद से पूर्ण स्वर बदलने लगता है। वे 'सुन्दरम' के क्षेत्र से 'शिवम' के क्षेत्र में प्रवेश करते हुए दिखाई देते हैं। कवि ने अपने शब्दों में 'गुंजन में धीरे–धीरे मैंने अपनी ओर मुड़कर तथा अपने भीतर देखकर अपने बारे में गुनगुनाना सीखा।'' इसी को हम सुन्दरम् से शिवम् की ओर अभिमुखता कह सकते हैं। इसकी अन्तरात्मा को अभिव्यंजित करने वाली दो पंक्तियाँ देखे :

''जीवन की लहर–लहर से हँस खेल–खेल रे नाविक।
जीवन के अन्तस्तल में नित डूब–डूब रे भाविक।''

पन्त की सौन्दर्य चेतना

पन्त की सौन्दर्य चेतना का स्फुरण प्रकृति सौन्दर्य से होता है। कुमाऊँ के हिमाच्छादित पर्वत शिखर, उनमें प्रवाहित निर्झर और हिम शिखरों पर अठखेलियाँ करती हुई बहुरंगी किरणों का इन्द्रजाल कवि को मानो अभिभूत कर देता है, पंत मानते हैं कि पर्वत प्रदेश के उज्जवल चंचल सौन्दर्य ने मेरे जीवन के चारों ओर अपने नीरव सम्मोहन का जाल बनाना शुरू कर दिया था। 'वीणा' से 'पल्लव' तक की रचनाओं में पन्त की सौन्दर्य चेतना की केन्द्र प्रकृति हो रही है। पंत ने स्वीकार किया है कि प्रकृति सौन्दर्य और प्रकृति–प्रेम की अभिव्यंजना 'पल्लव' में अधिक प्रांजल और परिपक्व रूप में हुई है।

'वीणा' की रचना प्रकृति की गोद में ही हुई है। जिसमें भावुक किशोर की निश्छल सौन्दर्यानुभूति व्यक्त हुई है। प्रकृति के सौन्दर्य में रमा किशोर कवि मानवीय सौन्दर्य की भी उपेक्षा करता है –

छोड़ द्रुमों की मृदु छाया,
तोड़ प्रकृति की भी माया,

बाले, तेरे बाल–जाल में कैसे उलझा दूँ लोचन ?

'पल्लव की' परिवर्तन कविता कवि की सौन्दर्य चेतना में भी परिवर्तन लाती है। यहाँ पहुँचकर कवि की सौन्दर्य चेतना अन्तर्मुखी हो जाती है। गुंजन तक आते–आते कवि की सौन्दर्य दृष्टि जगत् के सुख दुख से भी जुड़ जाती है जहाँ वह जीवन को, जगत को सुन्दन बनाने के लिए प्रेरित करता है –

सुन्दर से नित सुन्दरता, सुन्दरता से सुन्दरतम
सुन्दर जीवन का क्रम रे, सुन्दर–सुन्दर जगजीवन

सुन्दर से शिव की ओर पर्दापण करती कवि की सौन्दर्य चेतना जीवन के संघर्ष की ओर उन्मुख होती है –

मत हो विरक्त जीवन से
अनुरक्त न हो जीवन पर
जग परीधि मात्र जीवन की
स्थित केन्द्र अमर उर भीतर

शिवम् की ओर आकर्षित कवि नव्य बोध के लिए जीर्ण–शीर्ण पुरातन के विनाश का आह्वान करता है–

गा कोकिल बरसा पावक कण
नष्ट भ्रष्ट हों जीर्ण पुरातन
ध्वसं–भ्रष्ट जग के जड़ बन्धन
पावक पग धर आए नूतन
हो पल्लवित नवल मानव मन।

पन्त और छायावाद

छायावादी काव्यधारा के प्रवर्तक श्री जयशंकर प्रसाद थे जबकि पन्त जी को इस धारा का प्रतिनिधि कवि माना जाता है। छायावादी कवि प्रकृति के विभिन्न दृश्य–अदृश्य रूपों में मानव–जीवन का उसके विविध भावों रूपों और प्रवृतियों का प्रतिबिम्ब पाकर प्रकृति के माध्यम से ही उन सबका वर्णन करता है। इस दृष्टि से छायावाद को एक विशेष प्रकार की भावात्मक दृष्टि भी कहा गया है।

प्रकृति छायावादी काव्य का मुख्य तत्व इसलिए है कि इसमें कवि सभी प्रकार के विचारों की अभिव्यक्ति इसी के माध्यम से करता है। पन्त जी के काव्य में प्रकृति और उसके सभी रूप–स्वर तो प्रस्फुटित ही प्रकृति की प्रेरणा से हुआ था, वही उनके सुघड़, कलात्मक हाथों में आकर उनकी समूची कला बन गई हैः

''जो बाल सहचरी रही तुम्हारी,स्वप्नप्रिया
वह कला मुकुट बन गई तुम्हारे हाथों में।''

कवि ने प्रकृति को जड़ सता न मानकर एकदम चेतन–सजीव सता मानकर उसकी अबूझ भाषा शैली को समझने बूझने का प्रयत्न करता है। प्रकृति का नारी–रूप में चित्रण छायावादी काव्य की अन्य विशेषता या तत्व माना गया है। पन्त काव्य में इसका निर्वाह भी बडे सजीव–साकार रूप में हुआ हैः

''कहो, तुम रूपसि कौन?
व्योम से उतर रही चुपचाप
छिपी निज छाया–छवि में आप
सुनहला फैला केश–कलाप
मधुर,मन्थर,मृदु मौन।''

भावों का मानवीकरण भी छायावादी काव्य के समान पन्त जी के काव्य में यथेष्ठ रूप से उपलब्ध होता है। उनकी 'छाया' नामक कविता में से 'लोभ–सन्तुष्टि' नामक मनोभावों का व्यक्त और मानवीकृत स्वरूप देखेः

''कभी लोभ–सी लम्बी होकर
कभी तृप्ति–सी होकर पीन,
संसृति की अचिर विभूतियाँ
नापती रहती हो स्थिति–हीन।''

उनके द्वारा नाद–सौन्दर्य को उभारने के लिए दृश्यमयता के सजीव विधान के लिए बिल्कुल छायावादी अन्तरात्मा को उजागर करने वाली भाषा–शैली का प्रयोग सर्वत्र किया गया हैः

''बाँसों का झुरमट,संध्या का झुटपुट
हैं चहक रही चिडिया टी–वी–टी टुट–टुट।''

इस प्रकार, कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि छायावाद के जितने भी प्रमुख तत्व–वे शिष्ठ्य स्वीकार किए गये हैं, कविवर पन्त की कविता में उनका अत्यन्त सजीव सद्भाव एवं संयोजन हुआ है, जो उन्हें निश्चय ही छायावाद का प्रतिनिधि कवि प्रमाणित करता है।

निष्कर्ष

कविवर पंत ने सर्वत्र अपनी अनुपम कल्पना का सुन्दर परिचय दिया है। अपनी इस कल्पनाशीलता के कारण ही पंत आधुनिक कवियों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वे अपने काव्य में अनुभूति की कमी को कल्पना से परिपूर्ण करके काव्य को सजीव बना देते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि पंत जी कल्पनाजीवी कवि हैं। वे कल्पना के सत्य को सबसे बड़ा मानते हैं। पंत की यह कल्पनाशीलता ही उनको छायावाद से प्रतिवाद की ओर प्रगतिवाद से अन्तश्चेतनावाद तथा मानवतावाद की ओर ले गई। वे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के इस कथन से सहमत प्रतीत होते हैं– जिस प्रकार भक्ति के लिए उपासना या ध्यान की आवश्यकता होती है उसी प्रकार भावों के प्रवर्तन के लिए भावना या कल्पना अपेक्षित होती है।'' सचमुच पंत जी ने भावों के प्रवर्तन के लिए अतिशय कल्पना का प्रयोग किया।''

संदर्भ ग्रन्थ

1. आधुनिक हिन्दी कविता, डॉ0 पवन कुमार यादव, पेज न0 95।
2. प्रतियोगिता साहित्य, डॉ0 पवन कुमार यादव, पेज न0 668।
3. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिध कवि, डॉ0 सुरेश अग्रवाल, पेज न0 225, 226।
4. आधुनिक हिन्दी कविता, डॉ0 पवन कुमार यादव, पेज न0 107, 108, 109, 110।
5. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, डॉ0 सुरेश अग्रवाल, पेज न0 231, 232।
6. उपकार यू. जी. सी., डॉ0 दिलीप पाण्डेय, पेज न0 92, 93।
7. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, डॉ0 सुरेश अग्रवाल, पेज न0 239, 240, 241, 242।
8. आधुनिक हिन्दी कविता, डॉ0 पवन कुमार यादव, पेज न0 114।